

---

shrI chandrashekharendrasarasvatI stuti

श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीस्तुती

Document Information

---

Text title : chandrashekharendrasarasvatistuti

File name : chandrashekharendrasarasvatistuti.itx

Category : deities\_misc, gurudev, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : Shri Vijayendra Sarasvati

Transliterated by : Manda Krishna Srikanth <http://krishnasrikanth.in/>

Proofread by : Sunder Hattangadi

Latest update : May 13, 2012

Send corrections to : [Sanskrit@cheerful.com](mailto:Sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 21, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीस्तुती



श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तधर्ममार्गरतं गुरुम् ।  
भक्तानां छितवक्तारं नमस्ते चित्तशुद्धये ॥ १ ॥

अद्वैतानन्दभरितं साधूनामुपकारिणम् ।  
सर्वशास्त्रविदं शान्तं नमस्ते चित्तशुद्धये ॥ २ ॥

धर्मभक्तिज्ञानमार्गप्रचारे भद्दकडुणम् ।  
अनुग्रहप्रदातारं नमस्ते चित्तशुद्धये ॥ ३ ॥

भगवत्पादपादाब्जविनिवेशितयेतसः ।  
श्रीचन्द्रशेखरगुरोः प्रसादो मयि जायताम् ॥ ४ ॥

क्षेत्रतीर्थकथाभिज्ञः सख्यिदानन्दविग्रहः ।  
चन्द्रशेखरवर्यो मे सन्निधत्ता सदा हृदि ॥ ५ ॥

पोषणो वेदशास्त्राणां दत्तचित्तमलर्निशम् ।  
क्षेत्रयात्रारतं वन्दे सद्गुरुं चन्द्रशेखरम् ॥ ६ ॥

वेदज्ञान् वेदभाष्यज्ञान् कर्तुं यस्य समुद्यमः ।  
गुरुर्यस्य मलादेवः तं वन्दे चन्द्रशेखरम् ॥ ७ ॥

मणिवायकगोदादि भक्तिवागमृतैर्भूशम् ।  
आलानां भगवद्भक्तिं वर्धयंतं गुरुं भजे ॥ ८ ॥

लघूपदशैर्नास्ति क्यभावावर्दन कोविदम् ।  
शिवं स्मितमुपं शान्तं प्रणतोऽस्मि जगद्गुरुम् ॥ ९ ॥

विनयेन प्रार्थयेऽहं विधां बोधय मे गुरो ।  
मार्गमन्यं न जानेऽहं भवन्तं शरणं गतः ॥ १० ॥

एति श्री विजयेन्द्रसरस्वति रचितम् श्री चन्द्रशेखरेन्द्र  
सरस्वती स्तुति सम्पूर्णा ॥


The phrase vedaj nAn vedabhAShyaj nAn says that he turned people who (merely) knew Vedas (by recitation) into ones who knew the commentary, thus developed understanding of what they recited. AS.


Encoded by Manda Krishna Srikanth <http://www.krishnasrikanth.com>

Proofread by MK Srikanth, Sunder Hattangadi,

Avinash Sathaye

---

——  
*shrI chandrashekharendrasarasvatI stuti*  
pdf was typeset on November 21, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

